

'खुम्माण ढाल': जब मेवाड़ की अरावली से टकराकर खलीफाई साम्राज्य का दंभ चूर-चूर हो गया!

लेखक एवं शोधकर्ता: गोविंद मालवीय (Govind Malviya - REAL HI STORY)

प्रकाशन तिथि: 29 अगस्त 2026

दस्तावेज़ प्रकार: ऐतिहासिक शोध पत्र / पुरालेखीय लेख (Historical Research Document)

संग्रह: भारतीय इतिहास और संस्कृति (Indian History & Culture)

क्या आपने कभी सोचा है कि 7वीं से 9वीं शताब्दी के बीच जब अरब की इस्लामी सेनाएँ पूरे मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका, स्पेन और फारस (ईरान) को रौंदती हुई आगे बढ़ रही थीं, तो भारत की सीमाओं पर आकर उनका यह अभेद्य विजय-रथ अचानक कैसे रुक गया?

जिस फारसी साम्राज्य (Persian Empire) का इतिहास हजारों साल पुराना था, वह अरब आक्रमणकारियों के सामने मात्र कुछ दशकों में ढह गया और पूरी तरह परिवर्तित होकर ईरान बन गया। लेकिन भारत सदियों तक अपनी संस्कृति, सनातन चेतना और सम्प्रभुता के साथ चट्टान की तरह अडिग खड़ा रहा।

इतिहास की पुस्तकों से जानबूझकर गायब किए गए **480 वर्षों के स्वर्णिम कालखंड (712 ई. से 1192 ई.)** का सबसे बड़ा सच यह है कि भारत को फारस बनने से रोकने के लिए राजपूताना के वीरों ने अपनी छाती अड़ा दी थी। और इस प्रतिरोधी दीवार का सबसे मजबूत स्तम्भ था—**मेवाड़ का गुहिल राजवंश और उनकी 'खुम्माण ढाल'**।

1. इतिहास का वह गायब कालखंड: 480 वर्षों का प्रतिरोध

मुख्यधारा के इतिहास-लेखन ने यह रटाया कि 712 ईस्वी में मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध जीता और उसके बाद सीधे 1192 ईस्वी में तराइन के युद्ध में शहाबुद्दीन गोरी ने दिल्ली का दरवाजा खोला।

लेकिन 712 ई. से 1192 ई. के बीच के ये 480 साल कहाँ गए?

सच यह है कि इन लगभग 500 सालों तक अरब और तुर्क आक्रांताओं ने भारत के मुख्य भूभाग में घुसने के लिए सैकड़ों खूनी प्रयास किए, लेकिन हर बार अरावली की तलहटी और मालवा के मैदानों में उनका ऐसा कत्लेआम हुआ कि बगदाद और दमिश्क के खलीफा थर-थर कांपने लगे।

2. बप्पा रावल से खुम्माण द्वितीय: अभेद्य सुरक्षा पंक्ति

मेवाड़ के इतिहास में 8वीं से 9वीं शताब्दी का दौर केवल रक्षात्मक युद्धों का नहीं, बल्कि आक्रामक पलटवार का दौर था। 10वीं शताब्दी के अटपुर (आहाड़) शिलालेख और रणकपुर प्रशस्ति के अनुसार मेवाड़ के शासकों का प्रामाणिक क्रम इस प्रकार है:

1. बप्पा रावल (कालभोज)
2. खुम्माण प्रथम
3. मट्टट
4. भर्तृभट्ट प्रथम
5. सिंह
6. खुम्माण द्वितीय

नवसारी व मालवा का महायुद्ध (738 ई.)

उमय्यद खलीफा हिशाम के सिंध स्थित गवर्नर अल-जुन्नैद (Junayd) ने भारत को तीन दिशाओं से रौंदने के लिए विशाल सेना भेजी। इसके जवाब में भारत के तीन महानायकों ने एक अभेद्य महासंघ बनाया:

- **नागभट्ट प्रथम (गुर्जर-प्रतिहार):** मालवा मोर्चे पर अरबों को कुचला। ग्वालियर प्रशस्ति में इन्हें "म्लेच्छों का विनाशक" कहा गया।
- **अवनिजनाश्रय पुलकेशिन (चालुक्य):** नवसारी (गुजरात) के युद्ध में ताजिकों (अरबों) को गाजर-मूली की तरह काटा।
- **बप्पा रावल (मेवाड़):** अरावली के मोर्चे पर अरब सेना का संहार किया और भागती हुई अरबी सेना का पीछा करते हुए गजनी (अफगानिस्तान) तक चढ़ाई कर दी। वहाँ के अरबी समर्थित शासक सलीम को हराकर अपने भतीजे को गद्दी पर बैठाया। रास्ते में सैन्य शिविर स्थापित किया जो आज 'रावलपिंडी' कहलाता है।

3. खुम्माण द्वितीय: 24 राजपूत रियासतों का महासंघ और खलीफा का अंत

9वीं सदी के पूर्वार्ध (लगभग 812–836 ई.) में बगदाद के 7वें अब्बासी खलीफा **अल-मामून** (Al-Ma'mun) ने पूरे राजपुताना पर कब्ज़ा करने के लिए अपनी पूरी सैन्य ताकत झोंक दी।

24 रियासतों का एकत्रीकरण

जब खलीफा की सेनाएँ सिंध के रास्ते मेवाड़ की सीमाओं में घुसीं, तो खुम्माण द्वितीय ने पूरे भारतवर्ष के राजाओं को एकजुट किया। गुहिलवंशी खुम्माण द्वितीय के आह्वान पर:

- **गुर्जर-प्रतिहार सम्राट नागभट्ट द्वितीय** (मालवा/कन्नौज)
- **चौहान शासक गूवक प्रथम** (अजमेर/शाकंभरी)
- **प्रतिहार शासक कक्क** (मारवाड़)

तथा गुजरात, मालवा, लाहौर और पंजाब तक की 24 राजपूत रियासतों की संयुक्त सेनाएँ चित्तौड़गढ़ दुर्ग में एकत्र हुईं।

चित्तौड़ की तलहटी का भीषण नरसंहार

अब्बासी सेनापति **बशर इब्न दाऊद** (Bashar ibn Dawud) की लगभग 40,000 अरबी सेना ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग को घेर लिया। हफ्तों की घेराबंदी के बाद खुम्माण द्वितीय ने एक रणनीतिक दांव खेला:

1. **मध्यरात्रि का गोरिल्ला प्रहार:** खुम्माण द्वितीय ने रात के अंधेरे में चित्तौड़गढ़ के विशाल द्वार खोल दिए। मेवाड़ की पैदल सेना और खूँखार घुड़सवार अरबी कैंपों पर भूखे शेरों की तरह टूट पड़े।
2. **चित्तौड़ की तलहटी में कत्लेआम:** अरावली की संकरी घाटियों में अरबी घुड़सवारों का भागना असंभव हो गया। अरबी सेनापति का मुख्य प्रतिनिधि मैदान में ही मार गिराया गया।
3. **सेनापति की गिरफ्तारी और खदेड़ना:** खुम्माण की सेना ने अरबी टुकड़ियों का पीछा करते हुए उन्हें सिंधु नदी के पार धकेल दिया। खलीफा के मुख्य सेनापति (बशर इब्न दाऊद) को बंदी बना लिया गया और भारी जुर्माना व हर्जाना वसूलने के बाद ही छोड़ा गया।

4. 'खुम्माण ढाल' और 24 आक्रमणों का सच

दलपत विजय कृत 'खुम्माण रासो' और अरबी इतिहासकारों (जैसे अल-मसूदी और अल-बलाधुरी) के वृत्तांतों के अनुसार, खुम्माण द्वितीय ने अपने जीवनकाल में अरबों के 24 बड़े आक्रमणों को निष्फल किया।

इसी अदम्य साहस और भारत की सीमाओं की रक्षा करने के कारण मेवाड़ के इस गौरवशाली प्रतिरोध को 'खुम्माण ढाल' कहा गया। प्रसिद्ध अरब भूगोलवेत्ता अल-मसूदी ने अपनी पुस्तक 'मुरुज अल-जहब' (Muruj al-Dhahab) में स्पष्ट लिखा है कि उत्तर-पश्चिम भारत के गुर्जर-प्रतिहारों और गुहिलों के खौफ के कारण अरब कभी भारत के मध्य भाग में आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं कर सके।

निष्कर्ष

यदि खुम्माण द्वितीय और बप्पा रावल जैसे योद्धा अरावली की तलहटी में चट्टान बनकर न खड़े होते, तो भारत का भूगोल और संस्कृति भी फारस (ईरान) की तरह मिट चुकी होती। यह 480 सालों का गायब इतिहास केवल युद्धों की कहानी नहीं है; यह इस बात का प्रमाण है कि सनातन संस्कृति को बचाने के लिए हमारे पूर्वजों ने अपने रक्त से भारत भूमि का अभिषेक किया था।

'Khumman Dhāl': How Mewar's Fortitude Saved India from Becoming Another Persia!

Author & Researcher: Govind Malviya (REAL HI STORY)

Publication Date: August 29, 2026

Document Type: Historical Research Paper / Archival Record

Collection: Indian History & Cultural Studies

Have you ever wondered why the unstoppable expansionist wave of the Arab Caliphates—which obliterated ancient empires across the Middle East, North Africa, Spain, and Persia in just a few decades—came to a sudden halt at the borders of India?

The mighty Persian Empire, with thousands of years of rich civilization, collapsed within 20 to 30 years under the onslaught of Arab invaders and was entirely transformed into Iran. Yet, India stood immovable like a titan for centuries, preserving its ancient heritage, Sanatana consciousness, and sovereignty.

The biggest truth of the **480-year-long erased era of Indian history (712 AD to 1192 AD)** is that the brave Rajputs of Rajputana put up an impenetrable wall of resistance. The strongest pillar of this defensive shield was the **Guhila Dynasty of Mewar and their legendary 'Khumman Dhāl' (The Shield of Khumman)**.

1. The Lost 480 Years: An Era of Relentless Resistance

Mainstream history textbooks often present a distorted timeline: Muhammad bin Qasim captured Sindh in 712 AD, and then directly jumps to 1192 AD when Shahabuddin Ghori fought the Battle of Tarain.

What happened during those 480 missing years?

The truth is that for nearly five centuries, the Arab and Turkic Caliphates launched dozens of massive military campaigns to invade the mainland of India. However, every single time, their armies were brutally annihilated in the valleys of Aravali and the plains of Malwa, sending shocks of terror back to Baghdad and Damascus.

2. From Bappa Rawal to Khumman II: The Lineage of Steel

Between the 8th and 9th centuries, Mewar did not merely fight defensive wars; it launched devastating offensive counter-attacks. According to the 10th-century **Atpur (Ahar) Inscription** and the **Ranakpur Prashasti**, the authenticated chronological succession of Mewar kings is:

- 1. Bappa Rawal (Kalabhoja)**

2. **Khumman I**
3. **Mattat**
4. **Bhartribhatta I**
5. **Sinha**
6. **Khumman II**

The Great Battle of Navsari and Malwa (738 AD)

When **Al-Junayd**, the Arab Governor of Sindh under the Umayyad Caliph Hisham, launched a multi-pronged invasion of India, three formidable Indian rulers forged a historic alliance:

- **Nagabhata I (Gurjara-Pratihara):** Crushed the Arab forces on the Malwa front. The Gwalior Prashasti honors him as the "Destroyer of the Mlechhas".
- **Avanijanashraya Pulakeshin (Chalukya):** Decimated the Arab forces in the Battle of Navsari (Gujarat).
- **Bappa Rawal (Mewar):** Annihilated the invaders along the Aravali frontier and pursued the retreating Arab forces all the way to Ghazni (Afghanistan). He ousted the Arab-backed ruler **Salim** and placed his nephew on the throne. He established a military outpost en route, known today as '**Rawalpindi**'.

3. Khumman II: The Confederacy of 24 Rajput States & The Caliphate's Defeat

In the early 9th century (approx. 812–836 AD), the 7th Abbasid Caliph of Baghdad, **Al-Ma'mun**, deployed vast military resources to subjugate Rajputana.

The Assembly of 24 States

As the Caliph's forces advanced toward Mewar, Khumman II rallied kingdoms across Northern and Western India. Responding to the clarion call of Khumman II:

- **Pratihara Emperor Nagabhata II** (Malwa/Kannauj)
- **Chauhan Ruler Guvaka I** (Ajmer/Shakambhari)
- **Pratihara Ruler Kakka** (Marwar)

Along with armies from **24 Rajput principalities** spanning Gujarat, Malwa, Marwar, Ajmer, and Punjab, assembled at Chittorgarh Fort.

The Carnage at the Foothills of Chittor

The Arab army of nearly 40,000 under the command of **Bashar ibn Dawud** laid siege to Chittorgarh. After weeks of tactical patience, Khumman II executed a lethal counter-strike:

1. **Midnight Guerrilla Offensive:** Khumman II threw open the gates of Chittorgarh in the dead of night. The Mewari infantry and cavalry descended upon the unsuspecting Arab camps with raw fury.

2. **Massacre in the Valleys:** Trapped in the narrow gorges of the Aravalis, the Arab cavalry collapsed. The commanding Arab general's deputy was slain on the field.
3. **Capture and Expulsion:** Khumman's forces relentlessly pursued the fleeing enemy across the Indus River. The main commanding general of the Caliphate was captured and released only after paying immense war indemnities.

4. The Legend of 'Khumman Dhāl' and 24 Invasions

Literary works like '**Khuman Raso**' by Dalpat Vijay and accounts from contemporary Arab chroniclers (such as Al-Masudi and Al-Baladhuri) confirm that Khumman II successfully thwarted **24 major Arab invasions** during his reign.

Due to his unyielding shield-like defense of India's frontiers, his legacy became known in Indian history as '**Khumman Dhāl**' (The Impenetrable Shield of Khumman). The famous 10th-century Arab historian Al-Masudi wrote in his work '**Muruj al-Dhahab**' that the Arab Caliphate could never advance into central India due to the terror inspired by the formidable armies of the Gurjara-Pratiharas and the Guhilas of Mewar.

Conclusion

Had warriors like Khumman II and Bappa Rawal not stood like iron rocks at the foothills of Chittor, the cultural identity and geography of India might have suffered the same fate as ancient Persia. The 480 years of hidden resistance are not just tales of warfare; they are enduring proof of how our ancestors defended Sanatana civilization with their blood and valor.

© 29th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).